बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के 15वें स्थापना दिवस समारोह–2024 के अवसर पर किसानों के सफलता की कहानी

कृषक का नाम : श्रीनिवास कुमार
ग्राम : बगदाहा
प्रखण्ड : बोधगया
जिला : गया
मो0 सं0 : 9473451719 / 9135739179

1. प्रारंभिक परिस्थिति (Initial Situation) :

गया जिला के प्रखण्ड बोधगया से बगदाहा ग्राम निवासी 34 वर्षीय श्रीनिवास कुमार वर्ष 2009 में स्नातक की पढ़ाई पूर्ण कर एक एथलीट के रूप में अपना नाम कमाया। किन्तु अचानक वर्ष 2010 में पिताजी के मृत्यु हो जाने से पारिवारिक आर्थिक स्थिति खराब हो गई। फलस्वरूप उन्हें घर की जिम्मेदारी संभालना पड़ा और वे अपने पैतृक जमीन (10 एकड़) में पारंपरिक फसलें धान व गेहूँ मुख्य रूप से पारंपरिक विधि से लगाना शुरू किया। कृषि में ज्ञान की कमी के कारण उत्पादन में कमी और आमदनी न होने से काफी मायूस हो चुके थे। तब वे केंचुआ खाद के बोर में सुना और विशेष जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर के वैज्ञानिकों से संपर्क किया। वहाँ केन्द्र के द्वारा केंचुआ खाद का प्रशिक्षण लेकर कार्य शुरू करने की सलाह दी। इस प्रकार वर्ष 2013 में बिहार सरकार से अनुदानित दर पर 24 पक्का वर्मीबेड और 100 सतही विधि में केंचुआ खाद बनाना शुरू किया।

2. चुनौती (Challenge) :

- केंचुआ खाद उत्पादन तकनीक की पूर्ण जानकारी के अभाव में गुणवत्ता में कमी
- सही से प्रबंधन न करने के कारण केंचुआ मर गया।
- केंचुआ खाद के उपयोगिता के प्रति कुछ ही किसानो को जानकारी होने की वजह से बिक्री में कमी
- केंचुआ विक्री हेतु बाजार की कमी
- केंचुआ खाद से खती में होने वाले लाभ की जागरूकता में कमी
- उचित मूल्य न मिलना

3. संभावित विकल्प (Solution) :

श्री कुमार ने वर्ष 2013 में राज्य सरकार की सहायता से 24 पक्का वर्मीबेड और 100 सतही विधि में केंचुआ खाद बनाना शुरू किया। इस कार्य में कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर ने प्रशिक्षण व समय–समय पर आवश्यकतानुसार तकनीकी सहायता की जिस वजह से वे सफल केंचुआ खाद उत्पादक बन सके। वे अपना फर्म सत्यम ऑर्गेनिक नाम से पंजीकृत कराया और खाद की पोषकता को बढ़ाने के लिए जलकुम्भी (जो उनके फर्म के आस–पास में बहुतायत मात्रा में मिल जाता है) के साथ–साथ बायोफर्टीलाइजर का भी उपयोग करते हैं। केंचुआ के अलावे अन्य उद्यानिक फसलों से भी अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं।

4. कार्य योजना (Activities) :

24 पक्का बेड और 100 सतही विधि से केंचुआ खाद उत्पादन शुरू करने से उनकी आमदनी में वृद्धि हुई जिससे प्रोत्साहित होकर अपनी बिक्री को और बढ़ाने के लिए बायोफर्टीलाइजर एवं अन्य का इस्तेमाल कर गुणवत्तायुक्त खाद का उत्पादन शुरू किया। जिस कारण उनका बिक्री बढ़ने से आमदनी भी बढ़ी। वर्ष 2024 में प्रधान मंत्री स्वरोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत् वर्मीखाद उत्पादन के विस्तार और फूलों के नर्सरी व्यवसाय हेतु 10 लाख रुपये का आर्थिक सहायता मिला। वर्त्तमान में केंचुआ खाद के अलावे फूलों की नर्सरी का भी व्यवसाय कर जिला में अपनी अलग पहचान बनाई है।

5. परिणाम (Results) :

फिलहाल श्री कुमार गुणवत्तायुक्त केंचुआ खाद उत्पादन, फूलों की नर्सरी एवं गायपालन (10 गाय) से सलाना 20.00 लाख रुपये का लाभ प्राप्त कर रहे है। इन्हें राजभवन, बिहार द्वारा आयोजित उद्यान प्रदर्शनी में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

6. उत्प्रेरक संस्था (Facilitating Organization) :

I. कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
II. बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू), सबौर, भागलपुर
III. जिला कृषि विीाग, बिहार सरकार
IV. बामेती, पटना, बिहार

7. फोटाग्राफ्स (Action Photographs of Activity) :

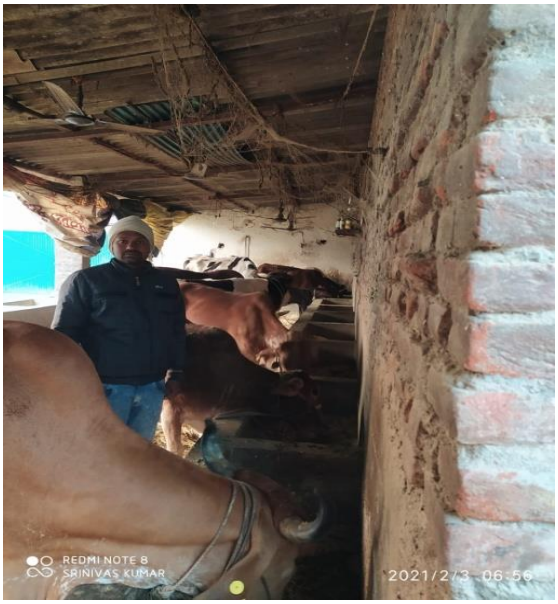

1. गायपालन (गीर एवं साहीवाल)

2. प्रशिक्षण के दौरान वर्मीकम्पोस्ट में जलकुंभी का उपयोग

3. गाय के दूध में वृद्धि हेतु अजोला उत्पादन

4. के.वी.के, मानपुर, गया के वैज्ञानिक द्वारा वर्मीकम्पोस्ट इकाई का भ्रमण

5. पौलीहाउस में सब्जी खेती

6. पपीता की खेती

7. मशरुम उत्पादन

8. केंचुआ खाद उत्पादन